सांख्य दर्शन में कार्य-कारण सिद्धांत

सत्कार्यवाद

कारण और कार्य के मध्य संबंध के बारे में सांख्य दर्शन का सिद्धांत सत्कार्यवाद कहलाता है। सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य अपने कारण में पहले से अंतर्निहित रहता है और उचित परिस्थितियों में प्रकट होता है।

जैसे घड़े का उपादान कारण मिट्टी का लोंदा है जिसमें घड़ा पहले से मौजूद है। कुम्भकार और उसका चाक आदि निमित्त कारण हैं जो घड़े को मिट्टी के लोंदे से व्यक्त करता है जो उसमें पहले से विद्‌यमान या सत् है।

सांख्य का यह मत न्याय-वैशेषिक के कारणता संबंधी सिद्धांत के विपरीत है। न्याय दर्शन के अनुसार कार्य कारण में पहले से नहीं रहता (असत्) बल्कि कार्य सर्वथा एक नई उत्पत्ति है, एक नया आरंभ है। इसलिए न्याय-वैशेषिक का कार्य-कारण सिद्धांत असत्कार्यवाद या आरंभवाद कहलाता है।

न्याय दर्शन के असत्कार्यवाद के विरोध में और सांख्य दर्शन के सत्कार्यवाद के समर्थन में ईश्वरकृष्ण ने अपने ग्रंथ सांख्यकारिका की कारिका संख्या 9 में लिखते हैं :-

असदकरणादुपादान ग्रहणात्, सर्वस्य संभवाभावात्।
शक्तस्य शक्य कारणात्, कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।

असत् अकरणात् :- अर्थात् जो असत् है, है ही नहीं उसे उत्पन्न या प्रकट नहीं किया जा सकता। जैसे बंध्यापुत्र या आकाश कुसुम।

उपादान ग्रहणात् :- तेल निकालने के लिए तिल आदि तैलीय पदार्थ ही लिया जाता है जो कि तेल का उचित उपादान कारण है इससे भी प्रमाणित होता है कि कार्य अपने उपादान कारण में पहले से मौजूद होता है।

सर्वस्य संभवाभावात् :- सबसे सब कुछ उत्पन्न न होना। यदि कार्य अपने कारण में पहले से मौजूद नहीं होता तो किसी भी कारण से कुछ भी उत्पन्न या प्रकट किया जा सकता था।

शक्तस्य शक्य कारणात्:- प्रत्येक कारण में कोई विशेष कार्य कर सकने की क्षमता होती है। आग जला सकती है। बर्फ नहीं जला सकती।

कारणभावात् :- कार्य अपने कारण के समान होता है। तिल का तेल तिल के समान गुणधर्म वाला होता है जबकि सरसों के तेल में सरसों के गुण पाए जाते हैं। यह समानता भी बताती है कि कार्य अपने कारण में ही पहले से ही अव्यक्त रूप में सत् था, विद्यमान था।

सांख्य दर्शन के अनुसार कार्य अपने कारण में अव्यक्त अवस्था में रहता है इसलिए उसे कारण से भिन्न समझना ठीक नहीं है। लेकिन न्याय-वैशेषिक इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि यदि मिट्टी के लोंदे में घड़ा पहले से ही होता तो उसे उत्पन्न करने के लिए निमित्त कारणों की आवश्यकता नहीं होती। और फिर जो पहले से मौजूद है उसे उत्पन्न करने की जरूरत ही क्यों? यदि मिट्टी के लोंदे में पहले से घड़ा है तो घड़े की जगह मिट्टी का उपयोग क्यों नहीं किया जाता?